International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 03, July - September, 2019, pp.214-216

भारत में संवृद्धिः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

डॉ. जगदीश प्रसाद मीना*

सार

प्राचीन समय में मनुष्य की आवश्यकताएँ इतनी सीमित थी कि मनुष्य एक प्रकार से स्वावलम्बी था वह स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता था, किन्तु जैसे जैसे मनुष्य की आवश्यकताएँ बढती गई, उनके लिए यह कठिन हो गया कि वह स्वयं के उत्पादन से अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। अब उसका ध्यान विशिष्टीकरण की ओर गया और उसने अनुभव किया कि यदि किसी एक ही वस्तु का उत्पादन करे तो अधिक उत्पादन कर सकता है, वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय प्रत्यक्ष न होकर मुद्रा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कर सकता है। स्वत्रन्त्रता के बाद भारत में आर्थिक नीतियों का अनुसरण किया। कई क्षेत्रों में तो भारत सरकार का एकमात्र अधिकार था। 90 के दशक के मध्य से भारत में अपने बाजार को धीरे धीरे खोलना आरम्भ किया और आर्थिक उदारवाद के मार्ग पर चल निकला सन 2000 के बाद आर्थिक सुधारों को और गति दी गयी और अब भारत मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था की दिशा मे बहुत आगे निकल गया। किसी देश की प्रति व्यक्ति सकल घरेलु उत्पादन में वृद्धि आर्थिक वृद्धि कहलाती है। आर्थिक वृद्धि केवल उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का परिणाम बताती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से देशों में पारस्परिक सहयोग और मैत्री भावना का विकास होता है। जिससे विश्व शान्ति की स्थापना में सहायता मिलती है। बहुत से देशों मे बढते हुए आर्थिक सम्बन्धों में राजनीतिक सम्बन्धों को भी सुदृढ बनाया है।

कुन्जी शब्दः– अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, संवृद्धि, विनिमय, आर्थिक उदारवाद, मुक्त बाजार, सकल घरेलु उत्पाद।

प्रस्तावना

आज के युग में कोई भी राष्ट्र एकाकी नहीं सकता। उसे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दूसरे राष्ट्र से आयात निर्यात अर्थात व्यापार करना पड़ेगा ऐसा कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि आज का व्यापार विकास का इंजन बन गया है। पिछले कुछ वर्षो से जब से उदारीकरण व वैश्वीकरण की नीति अपनायी गयी है। चीन ने बहुत तेजी से आर्थिक विकास किया है। सन 1991 मे आर्थिक सुधारों को अपनाने के बाद भारत में भी आर्थिक विकास दर में तेजी आयी है और विदेशी व्यापार का राष्ट्रीय आय में योगदान काफी बढा है।व्यापार सिद्वान्त के अनुसार दो राष्ट्रो के बीच साधनों की उपलब्धता उनकी कार्यकुशलता, प्रोधौगिकी आधारभूत ढांचे की उपलब्धता, सरकारी नीतियों आदि मे व्यापार का आधार बनता है। उदाहरणार्थ भारत में श्रम सस्ता होने के कारण वस्त्रों की उत्पादन लागत अपेक्षाकृत कम होती है, जबकि अमेरिका में अधिक होती है जिसमें भारत अमेरिका को वस्त्र निर्यात कर लाभ आर्जित करता है। दूसरी ओर अमेरिकी उपभोक्ताओं को भी ये वस्त्र सस्ते मिलते है जिससे उन्हे भी लाभ मिलता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार ने ऐसे अनेक देशों के विकास को आगे बढ़ाने का कार्य किया है जो आज विश्व के सर्वाधिक समृद्र देश समझे जाते है। ब्रिटेन का आर्थिक विकास ऊनी तथा सूती कपडों के निर्यात के कारण स्वीडन का लकडी के व्यापार से डेन मार्क का डेयरी के निर्यात के द्वारा तथा जापान का रेशम के व्यापार से सऊदी अरब, ईरान आदि देश कच्चे तेल के व्यापार से हुआ।

शोध का उद्देश्य

- प्राकृतिक साधनों का पूर्ण विदोहन एवं उपयोग करना।
- श्रम का सही विभाजन एवं विशिष्टीकरण।
- विदेशों में विस्तृत बाजार का पता लगाना।

---

* सहायक आचार्य, ई.ए.एफ.एम विभाग, स्व. राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बॉदीकुई, दौसा, राजस्थान।

- उत्पादन विधियों में सुधार करने के लिए ।
- विदेशी देशों में सांस्कृतिक सम्बन्ध एवं सम्यता का विकास का पता लगाना।
- विदेशी व्यापार प्रतियोगिता का पता लगाना।
- विदेशी व्यापार प्रतियोगिता मे भारत की स्थिति का पता लगाना।

शोध का रीति विधान

किसी भी शोध को सही तरीके से करने के लिए किसी विधि या प्रविधि का प्रयोग करना होता है। उस विषय की सबसे पहले परिकल्पना तैयार करनी पडती है। उसके बाद उसे छोटे छोटे अध्यायों में बाटकर भूमिका तैयार की जाती है। शोध की विषय साम्रगी के अनुसार उसकी रुपरेखा तैयार करके परिकल्पना की जाती है।

- प्राथमिक आंकडे
- द्वितीयक आंकडे

इस शोध पेपर में अधिकतर द्वितीयक आंकडों का प्रयोग किया गया है। जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रगति का पता लगाया जा सके।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रभाव

विश्व की अर्थव्यवस्था पर व्यापार के विभिन्न प्रभाव पड़ते है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर औद्योगिकरण उन्नत परिवहन, वैश्वीकरण, बहुराष्ट्रीय निगम और बाह्य स्त्रोत से कार्य निष्पादन, इन सभी का व्यापक प्रभाव पडता है। वैश्वीकरण की निरन्तरता के लिए अन्तराष्ट्रीय व्यापार मे बढ़ोतरी महत्वपूर्ण है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के बिना देश सिर्फ अपनी स्वयं की सीमा के भीतर उत्पादित माल और सेवाओं तक सीमित रह जाएगे।

- **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एव अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन** – एडम स्मिथ ने श्रम विभाजन के महत्व को स्वीकारा और बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन के कारण विदेशी व्यापार में लाभ होता है। विशिष्टीकरण से कार्य क्षमता में वृद्धि की जा सकती है और उप्तादन बढाया जा सकता है। स्वतन्त्र अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन को प्रोत्साहन मिलता है। क्योंकि इससे प्रत्येक राष्ट्र ऐसी वस्तुओं का उत्पादन कर सकता है जो वह सबसे कम लागत पर बना सकता है। जब एक देश दूसरे देश की तुलना में एक वस्तु को सस्ता तैयार कर सकता है तो दूसरे देश के लिए यह लाभदायक होगा कि उस वस्तु का निर्माण अपने देश मे ने कर अपितु पहले देश से खरीद ले। इसी प्रकार पहला देश, दूसरे देश से उस वस्तु को खरीद ले जो वह तुलनात्मक रुप से सस्ती बना सकता है। ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से विश्व के उत्पादन के साधनों का तुलनात्मक वितरण सम्भव हो जाता है जिससे व्यापार करने वाले देशों की वास्तविक आय बढती है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रत्येक देश के लिए दो बाते महत्वपूर्ण है– एक तो उसके आयात निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ कौन सी है और दूसरी उस देश का व्यापार विश्व के कौन से देशों से हो रहा है। प्रत्येक देश इस बात के लिए प्रयत्नशील रहता है कि उसके निर्यात की संख्या बढे तथा विश्व में अपने बाजार को बढा सके। इन सबका प्रभाव उस देश के भुगतान सन्तुलन पर पडता है। इसके अन्तर्गत हम किसी निश्चित काल में एक देश की व्यापारिक प्रवृतियों को अध्ययन करते है।
- **श्रम और पूँजी मे गुणात्मक सुधार**– व्यापार लोगो के गुणों में परिवर्तन ला देता है। उन्हे नयी वस्तुओं के उपयोग और पुरानी वस्तुओं को नये तरीके से प्रयोग की शिक्षा देता है। उन्हे नयी वस्तुओं के उपयोग और पुरानी वस्तुओं को नये तरीके से प्रयोग की शिक्षा देता है।
- **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का साधन मांग पूर्ति पर प्रभाव**– अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण प्रत्येक देश उन उद्योगो मे विशिष्टीकरण प्राप्त करता है। जिससे देश में उपलब्ध प्रचुर साधनों का प्रयोग किया जाता है। अतः जो साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते है उनकी मांग बढ जाती है एवं सीमित साधनों की मांग घटने लगती है।
- **रोजगारों के अवसरों पर प्रभाव**– अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के अन्तर्गत रोजगार की तात्कालिन प्रवृति तो यह होती है कि उसकी मात्रा घटने लगती है । क्योंकि व्यापार से केवल निर्यात उद्योगों को ही प्रोत्साहन मिलात है तथा देश के अन्य उद्योगो पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने से वहां रोजगार की मात्रा घटने लगती है। यद्यपि निर्यात उद्योगों में रोजगार की मात्रा बढती है, किन्तु उसकी तुलना में अन्य

उद्योगो में बेरोजगारी अधिक फैलती है। किसी भी पिछडे हुए देश में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रारम्भिक प्रभाव यहीं होता है।

निष्कर्ष

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के द्वारा विभिन्न राष्ट्र एक दूसरे के सम्पर्क में आते है जिससे वे एक दूसरे को समझते है तथा परस्पर अच्छे सम्बन्ध बनते है इससे न केवल समस्त देशों मे आपसी सहयोग की भावना जागृत होती है बल्कि राजनैतिक शान्ति में भी वृद्धि होती है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विश्वशान्ति की स्थापना में सहायक है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का महत्व केवल सस्ती और विविध वस्तुओं को उपलब्ध कराने तक ही सीमित नहीं है। बल्कि देश के आर्थिक विकास को गति प्रदान करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार ने विश्व के लोगो को सुखी बनाने व विश्व की चहुँमुखी उन्नति की प्रेरणा देता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण विकासशील राष्ट्रों को विकसित राष्ट्रों से सम्पर्क स्थापित करने का सुअवसर मिलता है जिससे अनेक शिक्षाप्रद लाभ प्राप्त होते है जो भौतिक पदार्थो के प्रत्यक्ष आयात से भी अधिक मुल्यवान होते है।

प्रो मियर ने कहा कि विदेशी व्यापार चुँकि निर्धन देशों को अपने से अधिक समृद्र देशों की सफलताओं एवं असफलताओं से सीख लेने का अवसर प्रदान करता है अतःएव विदेशी व्यापार उनके विकास की गति बढाने में बहुत अधिक सहायता प्रदान करता है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की सहायता से कोई राष्ट्र अपने आर्थिक संकट यथा तेजी मन्दी की स्थिति से ऊबर सकता है। कीमते बढने पर अन्य राष्ट्रों से आयात कर पूर्ति बढ़ाकर कीमतों पर नियंत्रण किया जा सकता है तथा मन्दी की स्थिति में अधिक उत्पादन को निर्यात कर अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाया जा सकता है। प्राकृतिक आपदाओं के समय एव अकाल पड़ने की स्थिति में दूसरे राष्ट्रों से खाद्यान्न का आयात कर लोगो के जीवन की रक्षा की जा सकती है साथ ही उनके जीवन स्तर को भी कायम रखा जा सकता है। इस प्रकार विदेशी व्यापार किसी भी राष्ट्र के आर्थिक एवं प्राकृतिक संकटकाल की स्थिति में संकट मोचक होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विकास एवं सार्वजनिक अर्थशास्त्र – डॉ. शंकरलाल शर्मा, डॉ. संतोष गढवाल– पेज न. 4 व 10
- भारत मे आर्थिक पर्यावरण – डॉ. ओ.पी. शर्मा
- भारतीय अर्थव्यवस्था – लक्ष्मीनाराण नाथुरामका
- भारत – 2017, 2018
- आर्थिक विश्लेषण – अग्रवाल, सिंह
- प्रतियोगिता दर्पण वार्षिक विशेषांक – 2017
- विक्की पिडिया , नेट– अन्तराष्ट्रीय व्यापार
- भारत में आर्थिक पर्यावरण – डॉ. ओझा
- भारतीय अर्थव्यवस्था – मिश्र, पुरी
- विकास का अर्थशास्त्र – एम.एल सिंगल
- उच्चतर आर्थिक सिद्धान्त – एच.एल आहुजा
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त – डॉ. जे. पी मिश्रा
- आज तक न्यूज चैनल (विकास जोशी) 11 जुलाई 2018
- राजस्थान पत्रिका/दैनिक भास्कर/दैनिक नवज्योति
- इण्डिया टूडे/ योजना/कुरुक्षेत्र/आउटलुक

❖◆❖